अध्याय 19

मौर्य एवं गुप्तकालीन भारत

प्राचीन भारत के इतिहास में मौर्यकाल का महत्वपूर्ण स्थान है। मौर्यकाल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक रहा। इस काल में चन्द्रगुप्त बिंदुसार एवं अशोक जैसे महान् एवं शक्तिशाली शासक हुए हैं। मौर्य साम्राज्य की स्थापना में आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) का योगदान महत्वपूर्ण था। मौर्य साम्राज्य की स्थापना के पूर्व मगध पर नंद वंश के शासक घनानंद का शासन था। घनानंद से मगध की जनता नाराज थी। उसने जनता पर बहुत अधिक अत्याचार किए थे। नंद वंश के शासन काल में भारत वर्ष के पश्चिमी भाग में छोटे–छोटे राज्य थे। सिकन्दर ने जब भारत वर्ष के पश्चिमी भाग में आक्रमण किया, तब इन छोटे राज्यों में से कुछ ने उसका सहयोग किया था। आचार्य चाणक्य सम्पूर्ण भारत वर्ष को एक सूत्र मे बाँधना चाहते थे।

आचार्य चाणक्य

आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) तक्षशिला विश्वविद्यालय के शिक्षक थे। उस समय मगध पर घनान्द नामक राजा का शासन था। प्रजा उसके राज्य से त्रस्त थी। एक बार राजा घनानंद ने अपने दरबार में आचार्य चाणक्य का अपमान कर दिया। उन्होंने तब ही इस अत्याचारी राजा के कुशासन को समाप्त करने की प्रतिज्ञा की। आचार्य चाणक्य ने एक साधारण बालक चन्द्रगुप्त को शिक्षा देकर मगध का शासक बना दिया एवं स्वयं उनके प्रधानमंत्री बनकर अपनी प्रतिज्ञापूर्ण की। आचार्य चाणक्य अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र के विद्वान थे। आचार्य चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक लिखी। अर्थशास्त्र में मौर्यकालीन साम्राज्य की राज–व्यवस्था एवं शासन प्रणाली की जानकारी प्राप्त होती है।

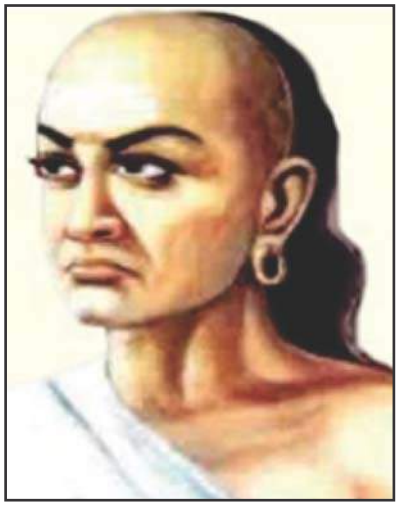

आचार्य चाणक्य

आचार्य चाणक्य एक चतुर राजनीतिज्ञ थे, इसलिए उन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य

चन्द्रगुप्त मौर्य में बाल्यावस्था से ही नेतृत्व का गुण था। वह अपने मित्रों के साथ खेल खेलते समय उनका नेतृत्व करना पसंद करता था। आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य के इस गुण की पहचान कर उसे भारतवर्ष का सम्राट बनाने का निर्णय किया था। चन्द्रगुप्त मौर्य 322 ई.पूर्व नंदवंश के शासक घनानंद को परास्त कर मगध का शासक बना था। तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त मौर्य ने छोटे–छोटे राज्यों को हराकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को बुरी तरह से परास्त किया। चन्द्रगुप्त मौर्य को सेल्यूकस से कंधार, काबुल, हैरात प्रदेश एवं बलूचिस्तान का कुछ भाग प्राप्त हुआ। साथ ही सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से हुआ। सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में अपना राजदूत बनाकर भेजा, जो मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रहा ।

मेगस्थनीज ने 'इंडिका' नामक पुस्तक भी लिखी, जिसमें मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती हैं। वर्तमान में इंडिका हमें अपने वास्तविक रूप में नहीं मिलती हैं, परन्तु यूनानी लेखकों ने इंडिका की कुछ घटनाओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने जीवन के अन्तिम काल में अपने पुत्र बिन्दुसार को राज्य सौंप दिया और जैन धर्म ग्रहण कर लिया। चंद्रगुप्त ने भद्रबाहु को श्रवणबेलगोला में अपना गुरु बनाया एवं तप का मार्ग अपनाया।

बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त के उत्तराधिकारी बिन्दुसार ने मौर्य साम्राज्य की प्रतिष्ठा को बनाए रखा। बिन्दुसार को अमित्रघात के नाम से भी जाना जाता था। आचार्य चाणक्य उसके दरबार में भी प्रधानमंत्री थे। बिन्दुसार में 272 ई.पू. तक विशाल साम्राज्य पर शासन किया। बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात् मौर्य साम्राज्य की बागडोर उसके सुयोग्य पुत्र अशोक के हाथ में आई।

अशोक महान्

मौर्य सम्राट अशोक अपने पिता के शासनकाल में प्रांतीय उपरत्या (प्रशासक) था, इससे उसे शासन करने का अनुभव प्राप्त हुआ। मौर्य साम्राज्य के इतिहास के संबंध में सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण सम्राट अशोक के काल से प्राप्त होते हैं। सम्राट अशोक के अभिलेखों में उसका नाम 'देवानां प्रियदर्शी' राजा एवं अशोक लिखा है। अशोक 269 ई.पू. में मौर्य सम्राट बना था। तत्पश्चात् अपने तीस वर्ष के शासन काल में उसने लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष को अपने अधीन कर लिया था। मगध के पड़ोस में कलिंग का शक्तिशाली राज्य था, जिसे अशोक जीतना चाहता था। इस कारण अशोक ने कंलिग पर आक्रमण किया।

सम्राट अशोक

पढ़े एवं बताएँ :–

1. आचार्य चाणक्य ने प्रतिज्ञा कब की व क्यों ?
2. चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दवंश के कुशासन को किस वर्ष में समाप्त किया ?
3. इण्डिका नाम पुस्तक किसने लिखी ?
4. अशोक महान् किस का पुत्र था ?

अशोक का बैराठ का शिलालेख

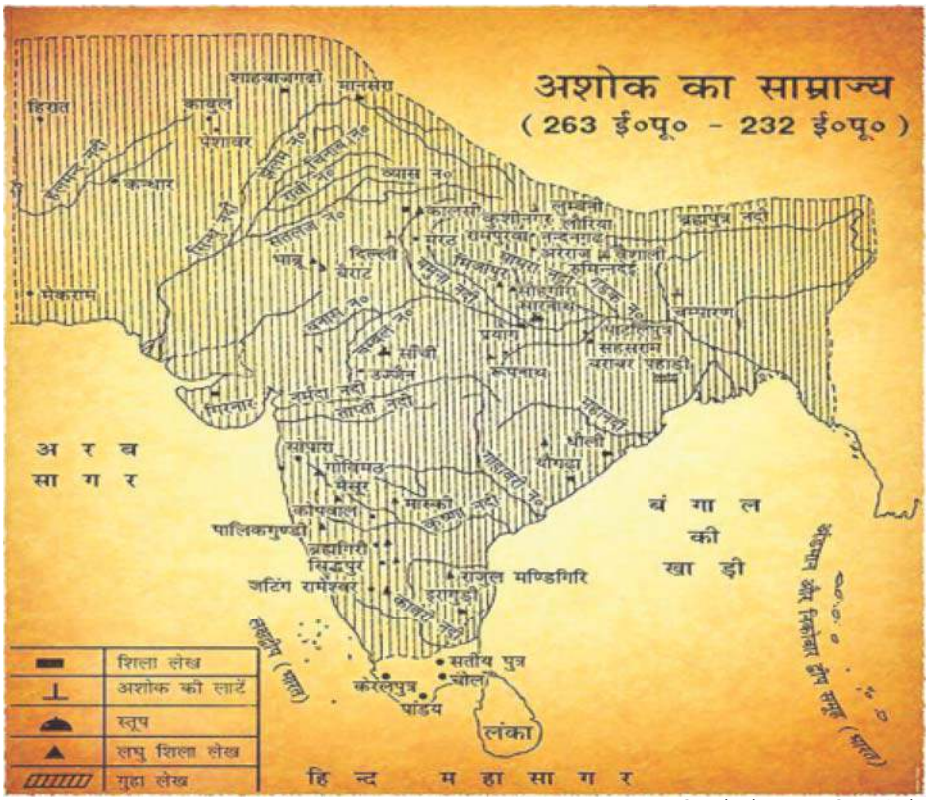

मानचित्र पैमाने पर आधारित नहीं हैं।

कलिंग विजय के नरसंहार को देखकर सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया था। सम्राट अशोक प्रथम शासक था जिसने अपने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को संदेश पहुँचानें का प्रयास किया।

सम्राट अशोक के अभिलेख सम्पूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं। अशोक के अधिकतर अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं, जो आम लोगों की भाषा थी। उत्तर–पश्चिम में कुछ अभिलेख यूनानी भाषा में है। अधिकतर अभिलेख ब्राह्मीलिपि में हैं, लेकिन अन्य लिपियों में भी कुछ अभिलेख प्राप्त होते हैं।

सम्राट अशोक की धार्मिक नीति

सम्राट अशोक स्वयं बौद्ध धर्म का अनुयायी था, परन्तु उसने सभी धर्मों के प्रति उदार नीति रखी। उसने अच्छे आचरण पर बल दिया एवं पशु वध को दण्डनीय घोषित कर दिया था।

सम्राट अशोक का एक विशाल साम्राज्य था। इस साम्राज्य में विभिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते थे। इन लोगों के बीच सद्भाव एवं एकता बनाए रखने हेतु अशोक ने प्रजा को शिक्षा देना अपना कर्तव्य समझा। इस कार्य के लिए धम्म महामात्य नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, जो लोगों को शिक्षा देते थे। सम्राट अशोक द्वारा प्रचारित इस नीतिगत शिक्षा को सम्राट अशोक का धम्म कहा जाता था, जिसमें जनता को अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाता था। अशोक के धम्म में दैनिक जीवन की समस्याओं को लेकर नीतिगत तरीके से रहने की बातें कही गई यथा पड़ोसियों से न लड़ो, सबसे अच्छा व्यवहार करो, दूसरे धर्म के

लोगों से टकराव न करो आदि।

बौद्ध धर्म में उत्पन्न मतभेदों को दूर करने के लिए अशोक ने पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति (महासभा) का आयोजन किया। तत्पश्चात् विदेशों में धर्म के प्रचार के लिए अलग–अलग क्षेत्रों में विभिन्न धर्म प्रचारक भेजे थे, जिनका विवरण निम्नानुसार है–

प्रचारक	क्षेत्र
सोन एवं उत्तरा	स्वर्णभूमि (पेंगू)
महेन्द्र एवं संघमित्रा	सिंहल (श्रीलंका)
महारक्षित	यवन प्रदेश
रक्षित	वनवासी (उत्तरी कनाडा)

विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं धर्म के प्रचार में सम्राट अशोक का योगदान अद्वितीय रहा है।

सम्राट अशोक के जन कल्याणकारी कार्य

सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद सम्पूर्ण जीवन सेवा एवं जन कल्याण में लगाया। उसने सड़कें, छायादार वृक्ष, कुएँ, धर्मशालाएँ, मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय आदि कार्य करवाए। उसने घोषणा करवाई थी, कि जनता अपने कष्ट निवारण के लिए राजा से किसी भी समय मिल सकती है। सम्राट अशोक के समय प्रजा के कष्टों में कमी आई थी तथा उनके नैतिक आचरण में वृद्धि हुई थी।

सम्राट अशोक के उत्तरवर्त्ती मौर्य सम्राट अयोग्य एवं दुर्बल होने से मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

गुप्तकाल

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत में शुंग, सातवाहन, कुषाण आदि वंशों का शासन रहा। कुषाण शासकों में सर्वाधिक प्रसिद्ध कनिष्क हुआ। कनिष्क का साम्राज्य भी विशाल था। चौथी शताब्दी में गुप्त राजवंश ने भारत की सत्ता संभाली। इस वंश ने लगभग 200 वर्षों तक शासन किया। गुप्त वंश के शासन काल में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा अधिक समृद्ध हुई जिसकी शुरूआत मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त एवं आचार्य चाणक्य ने की थी। गुप्तवंश का प्रथम प्रतापी शासक चन्द्रगुप्त प्रथम था, जो सन् 319–320 ई. में शासक बना। उसने सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधकर विशाल साम्राज्य की स्थापना की। वह एक कुशल प्रशासक कला एवं साहित्य का संरक्षक और उदार शासक था।

समुद्रगुप्त

चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका सुयोग्य पुत्र समुद्रगुप्त मगध का शासक बना। समुद्रगुप्त की माता का नाम कुमार देवी था। समुद्रगुप्त न केवल गुप्तवंश का बल्कि संपूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में से एक था। वह पराक्रमी, वीर एवं विद्वान् था। राजा बनते ही उसने उत्तर भारत के सभी शासकों को पराजित कर दक्षिण एवं पूर्वोत्तर में भी अपना राज्य विस्तृत किया। समुद्रगुप्त ने भारत के विशाल भू–भाग को जीतकर अश्वमेध यज्ञ किया और उसकी स्मृति में अश्व के चित्र अंकित सोने के सिक्कें चलाए।

समुद्रगुप्त

समुद्रगुप्त का शासन काल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों रूप से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जा सकता है। उसके दरबार में अनेक कलाकार एवं विद्वान् थे। हरिषेण उसका मंत्री एवं लेखक था, जिसने 'प्रयाग प्रशस्ति' की रचना की थी। 'प्रयाग प्रशस्ति' से समुद्रगुप्त के विजय अभियानों की जानकारी प्राप्त होती है। समुद्रगुप्त स्वयं एक महान् संगीतज्ञ था, जिसे वीणा वादन का शौक था। वह प्रजापालक एवं धर्मनिष्ठ शासक था, जिसने वैदिक धर्म एवं परंपराओं के अनुसार शासन किया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)

समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना। वह अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह योग्य एवं प्रतिभाशाली था। उसे कला, विद्या के संरक्षक एवं अद्वितीय योद्धा के रूप में सर्वाधिक स्मरण किया जाता है। उसने शक एवं कुषाण शासकों को परास्त किया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य भी भारत वर्ष के बहुत बड़े भाग पर विस्तृत था। विजय अभियानों के बाद उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर विक्रम संवत् चलाया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)

चन्द्रगुप्त द्वितीय युद्ध क्षेत्र में जितना वीर (रणकुशल) था, शान्तिकाल में उससे कहीं अधिक कर्मठ था। वह स्वयं विद्वान् था एवं विद्वानों का आश्रयदाता था। उसके दरबार में नौ विद्वानों की एक मंडली थी, जिन्हें नवरत्न कहा गया है।

विक्रमादित्य के दरबार के नौ रत्न		
महाकवि कालिदास	धन्वन्तरि	क्षपणक
अमरसिंह	शंकु	वेताल भट्ट
घटकर्पर	वराहमिहिर	वररूचि

चीनी यात्री फाह्यान चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में भारत आया था। फाह्यान ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन के बारे में लिखा है, कि ''उसकी प्रजा सुखी है। राजा न तो शारीरिक दण्ड देता है और न ही प्राण दण्ड। चाण्डालों के अलावा कोई माँस एवं मदिरा का सेवन नहीं करता है। लोग घरों में ताले भी नहीं लगाते हैं''। चन्द्रगुप्त द्वितीय का शासन काल प्रजा के लिए सुखमय एवं सम्पन्नता भरा था।

गुप्त काल में प्रजा सुखी थी। राजा दयावान थे। धन वैभव की कोई कमी नहीं थी। चारों और समृद्धि एवं उन्नति का बोलबाला था। सोने के सिक्के प्रचलन में थे। इस काल में कला व साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई थी, इसलिए गुप्तवंश का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है।

शब्दावली

देवानां प्रियदर्शी – देवताओं का प्रिय (अशोक की उपाधि)

ब्राह्मी लिपि – एक लिपि का नाम (वर्तमान की देवनागरी लिपि इसी से निकली है)

अश्वमेध यज्ञ – प्राचीनकाल में शक्तिशाली शासकों द्वारा किया जाने वाला यज्ञ।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक से तीन तक के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए –

1. आचार्य चाणक्य किस विश्वविद्यालय का शिक्षक था ?

   (अ) नालन्दा (ब) तक्षशिला

   (स) बनारस (द) विक्रमशिला ( )

2. मेगस्थनीज किसका राजदूत था ?

   (अ) सिकन्दर (ब) सेल्यूकस

   (स) चन्द्रगुप्त मौर्य (द) सम्राट अशोक ( )

3. विक्रमादित्य की उपाधि किस शासक ने धारण की थी ?

   (अ) सिकन्दर (ब) चन्द्रगुप्त द्वितीय

   (स) चन्द्रगुप्त मौर्य (द) सम्राट अशोक ( )

4. अर्थशास्त्र नामक पुस्तक किसने लिखी थी ?
5. अमित्रघात किस मौर्य सम्राट का नाम था ?
6. मगध की राजधानी का क्या नाम था ?
7. चीनी यात्री फाह्यान किसके शासन काल में भारत आया था ?
8. सम्राट अशोक का धम्म क्या था ?
9. चन्द्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न कौन–कौन थे ?
10. चीनी यात्री फाह्यान ने गुप्त साम्राज्य के बारे में क्या लिखा है ?
11. सम्राट अशोक ने लोक कल्याण के लिए कौन–कौन से कार्य किए थे ?
12. गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है ?
13. समुद्रगुप्त के व्यक्तित्व पर लेख लिखिए।

गतिविधि

आपके आस–पास के क्षेत्र का भ्रमण करें एवं वहां स्थित शिलालेखों की जानकारी प्राप्त कर फाईल बनाएँ ।